उन्मेष

(५)

क्रियायोग के विषय में श्रीश्रीमाँ द्वारा प्रवचन (जन्माष्टमी –२४-०८-०८)

श्रेष्ठ कुल व उच्चवर्ण की जाति में जन्मग्रहण करने से ही मनुष्य बड़े नहीं होते। भगवद्भक्ति और भगवद्दर्शन से मनुष्य स्वयं को कृतार्थ करता है। शुद्रकुल में जन्मग्रहण करने पर भी यदि कोई प्रकृत भगवद्भक्ति लाभ कर जीवन को धन्य कर सके तो वह जगत्-वरेण्य होता है। तब वह जगत् में पूजित होता है। तब कौन जानना चाहता है उनके कुल का परिचय? भक्त सर्वदा उनके इष्ट के परिचय से ही परिचित होते है। इस विषय में भक्त शिरोमणि आचार्य रामानुज के जीवनवृत में एक अपूर्व निदर्शन पाया जाता है।

कांचीपूर्ण पुणामेलि गाँव के शुद्रकुलोद्भव चतुर्थ वर्णीय एक भगवद्भक्त साधुपुरुष थे। प्रस्फुटित फूल की सौरभ स्वभाविक भाव में जैसे चारों दिशा में फैल जाती है वैसे ही गुणवाण व्यक्ति के यश का सौरभ भी स्वत: ही दूरदूरांतर में विस्तारलाभ करता है, वैसे ही परम भागवत् कांचीपूर्ण का नाम चतुर्दिशा में फैल गया था। सिर्फ स्वीय ग्रामवासी ही नहीं सुदूरवर्ती जनपदवासी भी कांचीपूर्ण के बारे में जानते थे एवं वह सब के निकट प्रकृत भक्त के रूप में ही परिचित थे। सभी विश्वास करते थे कि भगवद्दर्शन पाकर कांचीपूर्ण का जीवन कृतार्थ हो गया है। उनके ईष्टदेव श्रीवरदराज उनको प्रत्यक्ष दर्शन देकर उनके साथ नित्य कथोपकथन करते हैं, ऐसी जनश्रुति सर्वत्र ही प्रचारित थी। यह केवल जनश्रुति ही नहीं थी वस्तुत: श्रीवरदराज भक्त कांचीपूर्ण की पुकार में जवाब देते थे एवं जनगण के भीतर से कोई-कोई अपना अभीष्ट पूर्ण होगा कि नहीं यह श्रीवरदराज के निकट जानने के लिए भी कांचीपूर्ण को अनुरोध करते थे। कांचीपूर्ण भी उन सबों के अनुरोध की उपेक्षा नहीं कर सकते थे इसीलिए श्रीवरदराज के निकट उनसब की अर्जी ज्ञापित करके सदुत्तर प्रदान करते थे। पूणामेलि से कुछ दूर कांचीपुरी नामक गाँव में श्रीवरदराज का मंदिर था। पूणामेलि व कांचीपुरी के बीच श्रीमहाभूतपुरी ग्राम अवस्थित है। प्रत्यह कांचीपूर्ण महाभूतपुरी गाँव को अतिक्रम करते हुए इष्टदेव श्रीवरदराज का दर्शन करने जाते थे। वहाँ जाने का पथ आसुरी केशावाचार्य के गृह के सामने से होकर जाता था। एकदिन कांचीपूर्ण श्रीवरदराज के दर्शन करने के पश्चात् गृह की ओर प्रत्यागमन कर रहे थे, ऐसे समय लक्ष्मण (श्रीरामानुज) ने उनको देख लिया। उस समय लक्ष्मण केशावाचार्य के गृह में ही अवस्थान कर रहे थे। कांचीपूर्ण के पवित्र मुखमंडल, तेजपूर्ण कलेवर व उज्ज्वल चक्षु देखकर लक्ष्मण, विस्मित व मुग्ध हो गए। लक्ष्मण स्वयं अपूर्व दर्शन युक्त स्निग्ध कांतिमान थे। इसीलिए लक्ष्मण को देखकर कंचीपूर्ण को भी उसके प्रति आकर्षण का अनुभव हुआ। चुम्बक जैसे लोहे को आकर्षित करता है वैसे ही कांचीपूर्ण लक्ष्मण के प्रति आकृष्ट हो गए। तब कांचीपूर्ण ने बालक (श्रीरामानुज) के निकट आकर उसका परिचय लिया। लक्ष्मण भी परम सादर पूर्वक कांचीपूर्ण को अपने घर ले आया। केशवाचार्य कांचीपूर्ण को पहचानते थे। कांचीपूर्ण की तरह परम भागवत्, लक्ष्मण की तरह देवमानव पुत्र, उभय के सम्मिलन से जैसे मानों उनका गृह महातीर्थ में परिणत हो गया। तत्पश्चात् आहार समाप्त करके कांचीपूर्ण के विश्राम में जाने से तथा लक्ष्मण उनकी पदसेवा करने को इच्छुक हैं इसरूप इच्छा प्रकाश करने पर कांचीपूर्ण ने अत्यन्त संकुचित भाव के साथ कहा, ''तुम ब्राह्मण वर्ण श्रेष्ठ हो, मैं क्षुद्र कुलोद्भव शुद्र, तुम मेरी पदसेवा करोगे? यह क्या? ऐसी बात और कभी मुख पर नहीं लाना।'' लक्ष्मण समझ गए कि कांचीपूर्ण किसी भी प्रकार से इस विषय में सम्मत नहीं होंगे, इसीलिए वह मन ही मन दु:खित हुए परन्तु उनको कहा – ''महात्मन! शास्त्र में है, भगवद्भक्त चंडाल भी भगवद्भक्तिहीन ब्राह्मण की अपेक्षा श्रेष्ठ है। भगवान के प्रति भक्ति ही मानव को समस्त जनों से श्रेष्ठ पदवी में उन्नीत करती है एवं पूजित भी कराती है। आप वैसे ही भगवद्भक्त हैं । आप की पदसेवा तो कभी दोषयुक्त नहीं हो सकती। सिर्फ जाति से ब्राह्मण होकर कौन ब्राह्मण आप से श्रेष्ठ है?'' लक्ष्मण की कथा सुनकर कांचीपूर्ण समझ गए कि बालक की भक्ति व विश्वास एकदिन महाकार्य साधित करेगा। कांचीपूर्ण की धारणा कभी मिथ्या नहीं हो सकती। यह बालक लक्ष्मण ही भविष्य में 'आचार्य श्रीरामानुज' हुए थे।

(श्रीश्रीमाँ सर्वाणी द्वारा रचित बंगला ग्रंथ 'उन्मेष' से उद्धृत)

हिन्दी अनुवाद – मातृचरणाश्रिता श्रीमती सुशीला सेठिया